अज्ञेय

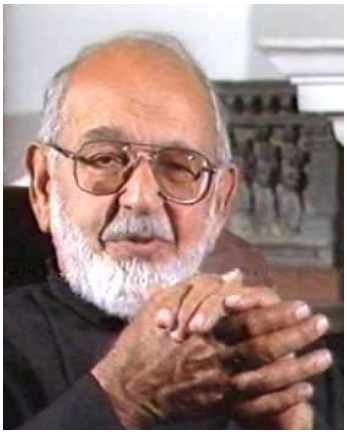

रात में गाँव

झींगुरी की लोरियाँ
सलु गयी थीं गाँव को,
झोंपड़े हिंडोलों-सी झुला रही हैं
धीमे-धीमे
उजली कपासी धूम-डोरियाँ ।

काँपती है

पहाड़ नहीं काँपता,
न पेड़, न तराई;
काँपती है ढाल पर के घर से
नीचे झील पर झरी
दिये की लौ की
नन्ही परछाईं ।

सहारे

उमसती सांझ
हिना की गन्ध
किसी की याद
    कैसे-कैसे प्राण-लेवा
    सहारे हैं
    जीने के !

छंद

मैं सभी ओर से खुला हूँ
वन-सा, वन-सा अपने में बन्द हूँ
शब्द में मेरी समाई नहीं होगी
मैं सन्नाटे का छन्द हूँ ।

प्रणाम

भोर
नील के पटल पर एक नाम
ओस में खिल आते हैं सूर्य
प्रकाश ! प्रणाम ।

Sacchidanand Hiranand Vatsyayan 'Agyeya' (1911-87) is virtually the muse of post-Independence Hindi poetry. His many collections were represented in two volumes entitled सदानीरा in 1986; our first two poems are from its second volume, while the third is from नदी की बाँक पर छाया (1981), and the last two are from ऐसा कोई घर आपने देखा है (1986).